

॥ श्री चण्डी ध्वज स्तोत्र ॥

□ Shri Chandi Dhwaja Stotra □

॥ ॐ गण गणपतये नमः ॥

अस्य श्री चण्डीध्वज स्तोत्र महामन्त्रस्य ।
मार्कण्डेय ऋशिः । अनुष्टुप् छन्दः ।
श्रीमहालक्ष्मीर्देवता । श्रां बीजम् । श्रीं शक्तिः ।
श्रूं कीलकम् । मम वाञ्छितार्थं फलसिद्धयर्थं विनियोगः ।
अङ्गन्यसः । श्रां श्रीं श्रुं श्रैं श्रौं श्रः इति कर हृदयादिन्यासौ ।

श्यानन्

ॐ श्रीं नमो जगत्प्रतिष्ठायै देव्यै भूत्यै नमो नमः ।

परमानन्दरूपायै नित्यायै सततं नमः ॥ १ ॥

नमस्तेऽस्तु महादेवि परब्रह्मस्वरूपिणि ।

राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा ॥ २ ॥

रक्षमां शरण्ये देवि धन-धान्य-प्रदायिनि ।

राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा ॥ ३ ॥

नमस्तेऽस्तु महाकाली परब्रह्मस्वरूपिणि ।

राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा ॥ ४ ॥

नमस्तेऽस्तु महालक्ष्मी परब्रह्मस्वरूपिणि ।

राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा ॥ ५ ॥

महासरस्वती देवी परब्रह्मस्वरूपिणि ।

राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा ॥ ६ ॥

नमो ब्राह्मी नमस्तेऽस्तु परब्रह्मस्वरूपिणि ।

राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा ॥ ७ ॥

नमो महेश्वरी देवि परब्रह्मस्वरूपिणि ।

राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा ॥ ८ ॥

नमस्तेऽस्तु च कौमारी परब्रह्मस्वरूपिणि ।
राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा ॥ ९ ॥
नमस्ते वैष्णवी देवि परब्रह्मस्वरूपिणि ।
राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा ॥ १० ॥

नमस्तेऽस्तु च वाराही परब्रह्मस्वरूपिणि ।
राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा ॥ ११ ॥
नारसिंही नमस्तेऽस्तु परब्रह्मस्वरूपिणि ।
राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा ॥ १२ ॥

नमो नमस्ते इन्द्राणी परब्रह्मस्वरूपिणि ।
राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा ॥ १३ ॥
नमो नमस्ते चामुण्डे परब्रह्मस्वरूपिणि ।
राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा ॥ १४ ॥

नमो नमस्ते नन्दायै परब्रह्मस्वरूपिणि ।
राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा ॥ १५ ॥
रक्तदन्ते नमस्तेऽस्तु परब्रह्मस्वरूपिणि ।
राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा ॥ १६ ॥

नमस्तेऽस्तु महादुर्गे परब्रह्मस्वरूपिणि ।
राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा ॥ १७ ॥
शाकम्भरी नमस्तेऽस्तु परब्रह्मस्वरूपिणि ।
राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा ॥ १८ ॥

शिवदूति नमस्तेऽस्तु परब्रह्मस्वरूपिणि ।
राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा ॥ १९ ॥
नमस्ते भ्रामरी देवि परब्रह्मस्वरूपिणि ।
राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा ॥ २० ॥

नमो नवग्रहरूपे परब्रह्मस्वरूपिणि ।

राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा ॥ २१ ॥
नवकूट महादेवि परब्रह्मस्वरूपिणि ।
राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा ॥ २२ ॥

स्वर्णपूर्णे नमस्तेऽस्तु परब्रह्मस्वरूपिणि ।
राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा ॥ २३ ॥
श्रीसुन्दरी नमस्तेऽस्तु परब्रह्मस्वरूपिणि ।
राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा ॥ २४ ॥

नमो भगवती देवि परब्रह्मस्वरूपिणि ।
राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा ॥ २५ ॥
दिव्ययोगिनी नमस्ते परब्रह्मस्वरूपिणि ।
राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा ॥ २६ ॥

नमस्तेऽस्तु महादेवि परब्रह्मस्वरूपिणि ।
राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा ॥ २७ ॥
नमो नमस्ते सावित्री परब्रह्मस्वरूपिणि ।
राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा ॥ २८ ॥

जयलक्ष्मी नमस्तेऽस्तु परब्रह्मस्वरूपिणि ।
राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा ॥ २९ ॥
मोक्षलक्ष्मी नमस्तेऽस्तु परब्रह्मस्वरूपिणि ।
राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा ॥ ३० ॥

चण्डीध्वजमिदं स्तोत्रं सर्वकामफलप्रदम् ।
राजते सर्वजन्तूनां वशीकरण साधनम् ॥ ३२ ॥

॥ श्री चण्डी ध्वज स्तोत्रम् सम्पूर्णम् ॥